

卷之五

1.191

ASHA ARCHIVES

वातायस्यो विष्णवे प्रियं च मृनि यथैव सूक्ष्मं सच मार्गं प्रकृतिं सूक्ष्मः
 माल मलयगिरिगुहा वसुधैव कुटुम्बकम् ६ रुद्रागमूलधन प्रकृतिपू
 नलय सिंह कर्तुं लालके प्रिण्ण प्रथाम मय सूत्रवलयन गङ्गास्य
 रुद्राय यागिन्यामनुजाय च विविधबुधनूतां सातनस्तानसर्वा नूतुसा
 सिद्धिः सूसिद्धा विविधबुधनूता दिव्यसिद्धिं ददं नु वक्ष्यामं प्रसिद्धिं य
 नवविगनं खगतिश्चाचनं वात्यादि ८ दूशा ल्योनादि मात्रि ग्रह गणः

अथ दहि च नंदहि

गलत्र विद्युक्ता प्रनत्ता वा राजदान मलो धविषटयतरयं आपितगवः
 मर्मसूत्रं वौकुं हुं कात्रयती रुद्रा सिने ग्वर्धयन्ति धीवन्ति नृत्यन्ती मनुसा
 नाकित्री ३ तक्विलाः कोलराधागिरिनि २ सागुक्ता कामनूपायलनव
 यटहाहा हा हुं कात्रनादा उर्हिष्ठा नीलकण्ठ जमलसूहदया विन्दू मूर्ध्नि
 पुनस्ता हुं ३ कालयन्ती नू ३ धिनवसाख्या यमाना सत्राया किद्रायं ताल
 यन्ति तर्द वा दावयन्ति पिवन्ति रुद्रा कामाख्या दूती जमलगहनूता वि

हृदयं नंदहि अथ दहि च नंदहि

रुगावति. सी. पु. न. ला. प. न. प. रुगावति. सी. पु. न. ला. प. न. प.

ॐ नमो भगवते ॥ ॥ अथ नवनागपूजन विधान ॥ यस्मिन् प्राया
य ॥ सलिलमिलासं यस्मिन् तस्य ॥ ॥ ॥ ॥ यस्मिन् तस्मात् नवाग्र कलसया
ग ॥ अथ यथा वाक् अथ गृह्य ॥ अथ याज्ञानं विलयात्
१ खट्वाकोन वाक् ॥ अथ याज्ञानं ॥ शिको न वाक् ॥
कलभग्वल १ सिधमं शिको न वाक् इति कर्तव्यं
यं वयं वा अथ वा ल जजमका स्नानं यं यं वयं लव

नय कलभया इडानं विहितं वलनय मिधलं रेव साइ
इ ॥ स्नानं कवा कमनि नडासि ॥ ॥ अथ नाललावक
विधि ॥ ॥ वलां मरुदुरु इलडाडा ॥ दडा अलरुयाय
थकात्रिनयस्थराजनयावक ॥ नासिय ॥ अथादि ॥
धूनयाय ॥ वाक् ॥ अथ न ॥ नवनागयात्राय हयाथ
आनं निमिरु थं श्री ३ ० ० हृदवना येयस्थराजं

मार्कण्डेय उवाच ॥ ३ ॥ यामासकान्ति २

नमस्तययामि ॥ श्रीसर्वरूपं ॥ ॐ ह्रीं ॥ ह्यामानका
ह्यादि ॥ ॐ ह्रीं ॥ ह्यादि ॥ सिद्धि नमुक्ति यानं हृदि न
मुधनागम् ॥ श्रीनमुसनी नव ॥ सांनि नमुग ॥ हृदय
सर्वविषय समनं ॥ सर्वसांनि क नमः ॥ जायपूजं च का
मंचलस्त्रीसंगान वृद्ध न यथा वा लयदा ना नां ह्यादि
॥ यति ॥ ३ ॥ उवाच ॥ मूलया नास ॥

श्री ३ ॥ ह्रीं देवनाया कमल पृथ्वी अनं समयया
मि ॥ स्नान विन स्नान गय ॥ नासिया ॥ अद्यादि वाक् ॥
थ ॥ गुर्न स्का न अरव दमंदला ह्यादि ॥ शासन पर
जा ॥ या ह्याया ॥ ॥ न्यास ॥ अलया गु ॥ जा ॥ अर्यया गु
हृजा ॥ हृदय हृदि ॥ शात्मयुजा ॥ धूनयाय ॥ मालिनी
य ॥ ॥ ॥ नमः ॥ अर्चिका ये ॥ श्री नव उवाच ॥ जयत्व

ॐ
श्री
नमः
॥

मालिनि देवी निर्मलमलनामिनी हानमकिं ह्येमु
देवी वृद्धिं ह्यं न जवदिनी ॥ जननी सवरुगानां संसा
ने इस्मिन् वावकिना मातावीनावली देवी कान्ते ह्येकु
नवत्सने ॥ जयनियनमगत्तनिर्वाहसंरुमि न जाम
यी निःसृगायक नूया यना हानमकिं स्वमिच्छा कि
या मङ्गला जदि न वा स्रखा यनः सय ना ला नुवन्

कुलुला कान नूया यरु नोद मकिं मुसंगीयसा ॥ रा
सना क्षानि नूया स्व नूया मिवा ई सना मानवामाथ
नोदी ॥ त्वमाख्यामिका विन्दू नूया वधू नाई च द्या क नित्ता
शिका लम् ॥ नूडं मकान उँ कान नुँ कान संजा अम यरु त्व
मायद्यनं न त्व नूया स्व नूया ॥ रुगमकान वस्तु यिनि नः
दिनत्वा ह वा यानि नूया स्व नूया ॥ श्री कल सभादिनी

नृदमागानथाननभक्तिः ४ ससुखाणिमूल्यामनाधीम
नीरात्ररुमिस्तिथीभक्तिकेकानरुनाहनाख्याव
पिस्तिमहोमिसद्यात्मिका नृगुरुभयकूनाधिनात्वम
हासनसंहागनी वाचभक्तामनाविन्दसदाहनिस्स
न्ददंरुपुनाभयसंम्यक् नानन्दनिवालयोखायुदह
नवीहनेनवाद्यानकीजनभक्तयनामालिनीनृदमाग

विननृदभक्तिः ४ खलसिद्धियालगनी सिद्धमागवि
मु४भयनाभीष्टियान्यायलुवीवाग्निमुद्धाभिवालगभ
नीमारुकावत्वमिच्छाक्रियामंगलासिद्धिलक्ष्मीद्विरह
हरुमिजनी ४ साध्वनारयायलाख्यानिनानायलीनक
वन्दुकलानकलामहोमनृयाहाकृष्णयागयियात्वजयनी
जयावात्मिक नृदसम्प्राहनीत्वनवात्माख्यदवस्यवास
गुयागानभिन्मनुमागजन्तुभोलिहिदीनयानान्

न के ४ मृत के ४ स्व सं पूर्य स द वी यं चामने । दिव्य या नात्स
वेम्भु लु कं काल कालिनी ॥ क ज म द्वि ज म पि ज म व नु ४
य व ष स य ज म्मा न वे के ४ म ना ने ४ म रे ४ रु गु वे क प्य
म म य मा स यि य म नु वि श्रा व ना ता सि ति म्भु लु कं कालः
काया लि ति दिव्य व क्ता न न के न म स्का न तुं का न स्वा हा स्व
ध का न वी ष ट् दुं का न जा नि ति न मे च म क्ता क ने च नि ति च मि ह

स्वा क्ता वि श्रा क्ता वली जा वि ति ४ सा ध के ४ पू र्ण के म्भु ति मि लु ल
दी कि ते या गि नी वृ त्त म ला य के नू ड की जा न से पू र्य स या गि नी या
ग सि दि व्यु द्ध द वि य स प्ता त्म मे ला वि ते ४ स्त्र ह पू र्ण रु यी य (७)
स क्ता दिव्या क्ता मि क्ता म्भु क या ता ल म र व व नी सि दि न या
रु ना र्व रु न र कि ना य ४ य ८० द लु क र्व क काल दि का न
गि का न म न य ४ स दा मा न व ४ (७) यि वी ना गि न म्भु

बुधं यवर्षगा लयि सनरुम् दवीयूगान्नाका नमहा
 लक्ष्मीसि यद्ममवो नागिदानान्मफाश्ववक्रयलभय
 महादायद्दशविम्रयनि दवीसम्पत्तय दवीत्वदीयम्
 खनिम्मलंयुल्लुचिदानुकारंरु नद्वियमानिक्कसत्तु
 बुलायु र्गगुल्लुंयववद्दारट्ट वधने नागया
 रुजावद्वयादागुल्लुंयिक्कनाससकीरिनाद्विम्र

कनिद्या नर्महाधिरिद्विसंस्मृत्यादानविद्वद्वय
महाकालिकालाग्निनज ॥ यरुक्तदग्मविन्दवक्रदुव
द्यार्क्यथायूधेभोलिमाताल्लसत्यद्रकिंजल्कसाल्य
जल ॥ सयससर्ववीनाम्बिकहनवीरनवस्तुगनस
गमाहं हसमहायनाधं हसमहायनाधं निर्व ॥ नवस्तु
स्वामहादेवीहं नवनमहाभना ॥ नमालिगविनिहृद

निग्ननायनमध्वनी ४॥ ॥ थनैलियंवकीनियय ॥ ॐ
मय्नासनाययादकां ॥ ॐ श्रीं की कनयूगवदुकनाथ
यादकां ॥ वलि ॥ ॐ नलासनाययादकां ॥ ॐ जं थमा (ओ) थो
कटादीपदम्बकी ववी महा ध्वं कण्ठपालाययादकां ॥ ॐ मि
हासनाययादका ॥ ॐ सदासनाययादका ॥ ॐ सांसवया
गिरयादका ॥ वनि ॥ ॐ यकविजागि लिनां पिरजा कठ

जा याग जा गवृजा सहजा कुलजा ॥ ऊ कचिन् जागि
निनां खचनी रूचनी लभचनी दिक्चनी ममुचनी नस
यनी नकाकनी यकनी यकनी वरुयव वटसफासक
नकाकनी लंणी जहासिनी नाय थाना नावलिंगटकर
खाहा ॥ ॐ यमाहाययादका ॥ ॐ कुं सिद्धि वामदाय
दविज्वायादकां ॥ वलि ॥ ॐ म्महाययादका ॥ ॐ गं

गिरूग ४ (ॐ श्री कृष्ण गणेशाय नमः) यथा इकां वलिं आवा
य ॥ दधुं नकुनि यानि विन्दु गज मूडा नदत्त ॥ ओं प ॥
श्री जी स्वाहा ॥ ओं स्वाहा ॥ धूम्र स्वाहा ॥ (ॐ स्वाहा ॥ गौ स्वाहा ॥
ॐ दं कर्पण हा हा स्वाहा ॥ (गो र्था पूं क मानं ग ग न न रि
रु प्र पं यानीत्य बा मूला च नु मूला इति न पाति मूलां वि घ्न हानं ग (हा
गं पूषाया धूप दीपा सव मधू वलि रि चर्चिता नूषि माग्नि चक्र

गं पूजि कानां विविधी विनि ह तुं लुकि मूकि पुदा ता ॥ अत्र ग
आदि ॥ इति पंच वल्यार्चन विधि न सर्व विधि पूर्ण नमः ॥
धन लि त छा ग य ल य म कु ॥ ह कान स कान अ धाम बभू च ती सि उ
प्र च नु म या मूल म कु वा उ म न नी ग म य ग्री न धन ॥ धन न ज या व
ऊ म मानं हा ल क ॥ संवर्त न संख वि य ॥ धनं लि पूजा ॥ श्री संवर्त न
आवा ह न ॥ प्रि द व ॥ न ता उ प्र च नु द गु या य ॥ आ धान ग क य न मः

जनकास्त्रायनमः ॥ कलुष ४ ॥ नाना ४ ॥ यथा ४ ॥ कलना ४ ॥ कर्तु
का ४ ॥ यथा ४ ॥ लिहा ४ ॥ महीखा ४ ॥ गुंला ४ ॥ निगुंला ४ ॥ ॥
ध्यान ॥ नुं डीं त फ चामिक लावर्तु नाना पृष्ठा यसारि ता ॥ दिव्य वस्तु
यनी धानां महिषासूत्र गमिनी ॥ कित्री नि कुलुला कार्त्तरे कयने मनि
नायनेः ॥ वन्नमाला विविधे ग्य हानमाला वनमिनेः ॥ अक्षद गतुता
क्रान्ता पीत वक्रस्त नानुहा ॥ सर्वा लंका वसंयुक्ता तदिकाटि समप्रसा

खड्गं गत तथा चक्रं वज्रां कू सधना गुता ॥ वन उंद मनुह सं धर गूल
याग्रसूसारिता ॥ दक्षिण न कना गुता यथा सा ता तथा यन ॥ रुत कं
धनुह स्ता च गदा घट्टा सूसारिता ॥ अथ स्थित्वा गिन ग्नि चं मही वध
महासूत्र ॥ नडुी वा निर्ज ता देत्य महा वल यत्रा क्रमं ॥ रुद य कि गि ग
लन विध ता सा गिना नूहा ॥ नुवं ध्यात्वा महा दवी सर्व काम रु ल प्र
॥ लाया धा उग ह स्ता धर खडा ॥ उ म नू कं विना ॥ नू ड च नु प्र चः

[illegible]

पाइकां॥ ॐ ह्रीं श्रीसिद्धिचामुनेयनीयाइकां॥ ॐ उग्रचम्भ
यविमहद्वर्जो देवीधीमहत्तनाचतिप्रवादयात्॥ ॐ ह्रीं
मूर्ति उग्रचम्भदव्यायेपाइकां॥ मन्त्र॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं प्रयाला
ह्रीं ययाइकां॥ चक्रस्यवामद्वान॥ ॐ ह्रीं ह्रीं कूलयूगव
ह्रीं गुकनाथययाइकां॥ चक्रद्वानग्र॥ ॐ ह्रीं गौंगीगूंगः तस्मै
ह्रीं कूलराग्वनाथययाइकां॥ चक्रद्वानदक्षिणा॥ ॐ ह्रीं यौयीं यं

ॐ अजिताय ३॥ दक्षीन ॥ ॐ क्रीं लूं अयनाजिताय ३॥ नेमत्य ॥ ॐ
क्रीं ॐ लूं कसुनी ३॥ यज्जिम ॥ ॐ क्रीं ॐ लूं कसुनी ३॥ वाय्व्य ॥ ॐ क्रीं ॐ
माहनी ३॥ उरुन ॥ ॐ क्रीं ॐ लूं आकवे ॐ नीयाइकां ॥ ॐ लूं न ॥ स्व ॐ
स्वमनुनवलि ॥ ॐ ति अक्ष ॐ लूं पृजा ॥ ॐ क्रीं हं लूं स्नाययाइकां
ॐ क्रीं ॐ जं नूडचलुव वक्रायनीयाइकां ॥ यूर्व ॥ ॐ क्रीं वृषाज ॥ ॐ क्रीं
ॐ ॐ प्रचलुमाहन्वनी ३॥ जालन ॥ ॐ क्रीं मयूज ॥ ॐ क्रीं ॐ ॐ चलु

ग्रयेकोमानी ३॥ दक्षिण ॥ ॐ क्रीं गनूज ॥ ॐ क्रीं जं जं चलुनायिका
येवेष्टुवी ३॥ नेमत्य ॥ ॐ क्रीं महिवाज ॥ ॐ क्रीं ॐ ॐ चलुयेवानाही ३॥
यज्जिम ॥ ॐ क्रीं गजाज ॥ ॐ क्रीं ॐ ॐ चलुवत्ये ॐ न्द्रायनी ३॥ वाय्व्य ॥
ॐ क्रीं प्रताज ॥ ॐ क्रीं ॐ ॐ चलुनूपायेवामलुये ३॥ उरुन ॥ ॐ क्रीं
सिंहास्नाययाइकां ॥ ॐ क्रीं ॐ अः अतिचलुकायेमहालक्ष्मीयाइकां
ॐ न ॥ स्वस्वमनुनवलि ॥ ॐ ति अक्षयप्रयूजा ॥ ॐ क्रीं नं नीं नूं

छासला॥ दाकला॥ ग्रीखन्दधूप॥ लूदकिता॥ यात्राससि॥ उं द्रो
सहं कं मं लं वं नं यां द धि वित्तया प्रसनाययाइकां॥ धमिलिस. पूर्वादि
०० गानाकं॥ अह व प्रसमध्यत्वं चम्यस्वानत्वाकछाय॥ उं द्रो सगिवतत्वा
य. जं जं नूड च नूड वृक्षायनी. अगिताह से नवाय प्रयागद प्र वृक्ष
लाकाय. चम्यक पूष्ययाइकां॥ पूर्वयप्र॥ उं द्रो हं सदागिवतत्वा
०० प्रचक्षु. माह ग्वनी नूड से नवाय. वनूलाक प्र. नूड लाकाय. चम्य

कपूष्ययाइकां॥ अगिपप्र॥ उं द्रो सं ०० ग्वनतत्वाय उं उं चक्षु ग्रायेः
कोमात्रीचनुरे नवाय. कालायूनमहाक प्र. अगि लाकाय. चम्यक पूष्य
याइकां॥ दाकिता॥ उं द्रो कं ०० विद्यातत्वाधिफय मं मं चक्षु नीयिका
येये वृवीकाध से नवाय. अह हासक प्र. विष्णु लाकाय. चम्यक पूष्यया
इकां॥ नेमत्य॥ उं द्रो सं मायातत्वाधिफय ०० ०० चक्षु नीवा नाही. उन्म
ने नवाय ऊयकि महाक प्र. तु लाकाय. चम्यक पूष्ययाइकां॥

धम ॥ उं क्रौं लं कला त्वा य नं नें च नु व त्थे नें द्वा नी क या ली सः
 न वा य च नि ग्र म हा रु गू ल ला का य च म्य क य ध्यं पा इ कां ॥ वा य
 य ॥ उं क्रौं वं नी य म त्वा य उं उं च नु नू या ये वा मू धु ली य न ले न वा य
 उ का सु क क गू ला का य च म्य क य ध्यं पा इ कां ॥ उ रु त्र ॥ उं क्रौं यं पू र
 ष त्वा य जं जः ज गि च न्द्रि का ये म हा ल क्सी सं हा न ले न वा य दे वी
 का ट म हा रु गू नि व ला का य च म्य क य ध्यं पा इ कां ॥ ४४ ग न

उं क्रौं ना रु प्र द कूं उ ग्र च न्द्रि न न म द नी दूं कूं स दा न क र त्वां मां
 कूं स मृ त्प ह न उं प रु हि त्वा य उ ग्र च न्द्रि य ला का य च म्य क य ध्य
 पा इ कां ॥ म ध्य ॥ ध्व न नूं वें लि ॥ घ ल गा द न्द्र स व लि वि य म न्द्र
 उं क्रौं जं जा नू ड च न्द्रा व क्ता य ली ज गि ता ह ले न वा य घृ ता द ना य व
 जै ग क र स्वा हा ॥ उं क्रौं रुं रुं प्र च न्द्रि मा ह ग्व नी नू नू म हा ले न वा य
 रं ग क र स्वा हा ॥ उं क्रौं उ उ प्र च न्द्रि य ये को मा नि च नु ले न वा य घृ

न पृ ष्ठ न

घृ ता द ना य

१ दि. तु तलेका वचन प्रसूति



गादनायवलिंगं कुरु स्वाहा ॥ उं क्रीं मम चतुर्नायकां येषु प्रवीक्राध्य
हे नवाय घृणादनायवलिंगं कुरु स्वाहा ॥ उं क्रीं ॐ चलीनेवानाह उ
मकुरे नवाय घृणादनायवलिंगं कुरु स्वाहा ॥ उं क्रीं उने चतुर्वत्ये
ॐ नुनीकयालिसरे नवाय घृणादनायवलिंगं कुरु स्वाहा ॥ उं
ॐ उओचतुर्नूपाये चामूक्षुशीषनरे नवाय घृणादनायवलिंगं
ॐ क्रीं अंजः अति चतुर्काये महालक्ष्मीसंहा नरे नवा

दनायवलिंगं कुरु स्वाहा ॥ उं क्रीं नागपदं पुं उग्रचतुर्न
दनी कुरु सदानकरत्यां मां कुरु समुत्पन्नं मूर्तिं उग्रचतुर्द्वयाये
घृणादनायवलिंगं कुरु स्वाहा ॥ धनं नं व सुं लिं पूर्वादि ष्ठीं गम
नाकं चम्यस्वान्धवरे सयूजनधून्धकम पुं नं मध्ये त्वं वलि विषय
वलि सं चम्यस्वान्धायमाल ॥ मूलमकुना प्रयागालि स्वउर्गे न
संपूष ॥ मूलनवाल ॥ आवाच मूडा धनानि इव नया सकलं

पां प्रियां कृति छा य वरुंग ॥ वलि धूय दीय ने व द जाय ला व
ग्रा सं वला ॥ लाकि सूत्र ॥ माहा माया ॥ विद व ॥ इ व न या नित्य कर्म
रु क ॥ वा क ॥ न स ह ॥ त र्थ न ॥ नु का न क ॥ स म छा य ॥ ध न पा थ या
य ॥ अ म्ब पूर्व ॥ व लि वि स कू न ॥ सा कि धा य ॥ ठ ठ ति पा इ कू दू या
वि धी ॥ ॥ अ थ इ ति या वि धि ॥ पू जा इ थ ध्वं ॥ स म सं ॥ ग्री ख सु च नः
स्वा न ध ल पा ग्र त छा जा या य लि मा उ रं ग ल ला स व ना क सु नि

अ न ग या ग्र सिं उ हा द कि ला ॥ अ म्बु आ म्ब पा ग्रा स ना य पा इ कां ॥ क
द य्थ छा य म नु ॥ उं डों हं स दा नि लु वा त त्वा य ठ ठ ग्री प्र च लु मा
ह न्वी नू नू रै त वा य व नू र म हा क ॥ उ नू ड ला का य क मू द य्थ
पा इ कां ॥ ठ ठ त्या दि अ ग्नि य ग्र आ दि न म त्थ त्वं थ व र म नु न क मू द
य्थ छा य त छा जा इ नू र व लि वि य म नु ॥ उं डों हं ग्री प्र च लु मा ह
ग्वी नू नू रै त वा य व लि ग र २ स्वा हा ॥ ठ ठ त्या दि न व म नु न त छा

जासवालिवियमाल॥ हूतिद्रुतियाविधि॥ तताप्रितियाविधान
पूजन, द्रव्यं नकचन्दन पातुलिखान यावकजा, थावटलस्य
समाठ, कंचला, हिरवावला, कपूरधूप, पूनदक्षि, स्म, खयत्रसिं, मद्य, म
मनपात्र, पूजा उंकां म्मां मद्य, मऊ नपात्रय पाइकी॥ पातुलिपूष्यकायम
क॥ उंकां ग्रीष्मनतला, यउंउं च (स्म) मये कोमारी, चसुरे नवाय, काला
महाकृष्णजिह्वा कोय, पातुलिपूष्यपाइकी॥ हूत्यादि नवमकुन

लापत्रादि नमत्थातां, पातुलिखान काय, थवरमकुन॥ नकसाति
जासवालिवियमकु॥ उंकां उंकां च (स्म) ग्राये कोमारी, चसुरे नवाय न
कसात्रादनाय बलिगट्ठ २ स्थाहा॥ हूत्यादि नवमकुन, यावकजास
वालिविय हूतिद्रुतियाविधि॥ तताचीउ थियाविधान॥ पूजन द्रव्य
थं॥ चतुस्रमचर, मलिस्थान, खिचनिजा, षट्त्रसपात्र, यलमाठ, कसः
ला, प्याथलला, सथला, संधूप, वर्गलै, तसिं, लावत, दक्षि, स्म॥ मलिस्वा

नछायमनु॥ उं क्रौं मं ल पा ग्रासनायवाइकां॥ उं क्रौं कं विद्यात
त्वाधिपय चं लुं रं वं वां यं वेष्टुवी क्राध से न वाय ज ह हा स रु प्र विष्
लाकायमालिपूष्ययाइकां॥ ह्त्वादिनवमकुन नेमत्पादि मभेत्वं
मलिस्वानछायमाल॥ कीलगास्वलिवियमनु॥ उं क्रौं मं मं च ह्यु
नायिकाये वेष्टुवी क्राट से न वाय वलिग डूर स्वाहा॥ ह्त्वादिनवरे
मनु नवाल॥ ह्त्वादि विधि वेष्टुवी उत्पति॥ ततो पंचम विधान

॥ इध्वं कं कूं मचत् मूगगा साध्यात् स्वाग्रायमाठ प्याक दास
लागी लधूप इवलसिं मूति दही म सत रुा स्या न छायमनु॥ उं क्रौं
मूगां कं जि पा ग्रासना॥ उं क्रौं मायात त्वाधिपय एं एं च ह्यु न्ये वा ना
हि उमरु से न वाय जय कि म हा रु प्र तु ला काय वधू त्रिपूष्य
३३॥ ह्त्वादिनवमकुन रेय छिमादि मध्वक सध रुाल स्या न छाय
यमाल॥ मूगगा सवलिवियमनु॥ उं क्रौं एं एं च ह्यु न्ये वा ना ही उम

रुहेन वाय माया दनाय बलि ग द्र २ स्वाहा ॥ गूत्पादि न व म कु न वलि
गूत्ति यं व मि विधि वा ना ही उ त्यति ॥ त ता ष ष्टि वि धान ॥ पूजा क्र थ
थं ॥ ल ग ल च न च न नू प स्नान गीता क लिय पा ग ना ठ म ठ चू सा ला
द्रि य ला बाल धूप स न कं थ सि ॥ सं ख द की द म ॥ गुं डी मू म धू पा ग स ना
म ३ ॥ नू प स्नान छा य म कु ॥ गुं डी लं क ला त त्या नु नें च वी सु व त्पे गू न्दा
क या ली स से न वा य च नी ग म हा क ग गूल ला का य ना ग प य ३ ॥

गूत्पादि न व म कु न रे वा य व प ग आदि न म ध्व त्वं नू प स्नान छा य ॥ ध
लं ग स व लि म कु ॥ गुं डी च नें गू न्दा य नी क या लि स से न वा य घृ ता द ना
य ब लि ग द्र २ स्वाहा ॥ गूत्पादि न व म कु न च ल ग स व लि वि य ॥ गू
ति ख ष्टि वि धान गू न्दा ये नी उ त्यति ॥ त ता स फ मी वि धान ॥ पूजा क्र थ
थं ॥ न क च न्द न ही ग हि या ग का य लि स्नान च ता मा ठ अ त ला मू न र
का स ला उ ल सिं सि न थि सि न ल द कि द म गी ख नु धू प ॥ गुं डी

नक पाशासनाय ३॥ कायलिस्वानकायमनु॥ तुं द्रौं गं गं चतुर्वायैः
चामुमुयेलीवनसेनवाय, नकासकमहाकगलाकायकायलिप्य
पाइकां॥ ७७॥ त्यादिनवरमनुनउरुनयगादिमध्यत्वंथवरमनुन
कायलिप्यछाय॥ हिजासवलिविय॥ तुं द्रौं गं गं चतुर्वायैः
मुमुलीवनसेनवायै, नकादनायवलिंगद्रु २ त्याहा॥ ७७॥ त्यादिन
मनुनहिजासवलिविय॥ ७७॥ तिसकमिविधानचामुमुउत्पति॥

॥ अकमिविधान॥ पूजाद्रूपं॥ चतुसमचत, त्रिनिस्वान्, खिलः
जाइइयागु॥ खलुतिमाउ॥ दाकला॥ ससला॥ धूपवास॥ रुतिकदः
किगा॥ मुं कीलपाशाय ३॥ तुं द्रौं अं अः अतिचतुर्कायै, महालक्ष्मी
संहानसेलु, नवायदवीकाटमहाकगुनिवलाकाय, मालतिप्य
पाइकां॥ ७७॥ त्यादिनवरमनुनरे ७७॥ त्यादि, मध्यत्वं, मालतिप्य
छाय॥ खीरजासवलिवियमनु॥ तुं द्रौं अतिचतुर्कायै, महालक्ष्मी

संहात्रहेनवायदवीकाटमहाकृष्णिवलाकायमालनिष्ययाइ
कां॥ ॐ त्यादिनवमकुनर ॐ ग्नादिमध्यं त्यं जीलीत्यानछाय॥
कीलजासवलिवियमकु॥ ॐ द्वां जगिचक्षुकायेमहालक्ष्मी संहात्रहे
नवायकात्रादनायवलिरुद्रस्वाहा॥ ॐ त्यादिनवमकुनलिविय॥
ॐ गिअक्षमिविधिमहालक्ष्मीउत्पति॥ नक्षानमिविधन॥ पूजाद्रु
॥ वदुममचतनकपात्रननमांसखदमलयाहीनाखदुमलयाहिपा

ॐ त्यादिनवमकुनर ॐ ग्नादिमध्यं त्यं जीलीत्यानछाय॥
कीलजासवलिवियमकु॥ ॐ द्वां जगिचक्षुकायेमहालक्ष्मी संहात्रहे
नवायकात्रादनायवलिरुद्रस्वाहा॥ ॐ त्यादिनवमकुनलिविय॥
ॐ गिअक्षमिविधिमहालक्ष्मीउत्पति॥ नक्षानमिविधन॥ पूजाद्रु
॥ वदुममचतनकपात्रननमांसखदमलयाहीनाखदुमलयाहिपा

चनुदव्यायेनकादनायवलिगृह्णस्वाहा॥ इत्यादि नवमकुन
हीजासवलिविय॥ इति नवमीयाविधि॥ उग्रस्मृत्यति॥ ध्वननव
इर्गापूजाविधि॥ तमाअक्षमीमहाविधि॥ यतवासनमासकाया
य॥ स्वमुपूज॥ कूटू॥ रुतसि॥ सरूति॥ वलिपात२॥ अर्घ्या
प्र॥ मालक॥ द्रुवास्यंभव२थायसताललावकावतय॥ वलाम्
रुर्हलहाव॥ अद्यादिमासनकृ॥ वाक्॥ महाअक्षमिपार्व

य॥ स्वस्त्यापननिमित्तार्थन॥ कूलमार्हसुमहाहेनवायअर्घन
मः॥ गून्नमस्का२॥ न्यास॥ उग्रचम्पुया॥ मूलया॥ इलप्रागु॥ अ
र्घ्याग्र॥ रुतसि॥ आत्मपूजा॥ मालनिव॥ वंचवलिदद्यात्
धनधीनहात॥ उ॥ अथवात्राहकल्पत्यादि॥ वाक्॥ जावत्चन्द्रासमो
नूत्यंमहिअग्निरुतायहा॥ तावत्सुविनंकासंवनस्तोयस्थिता
रुव॥ स्थिताहवमहादवीदवानामनूजायत॥ यावत्दगामियर्थ

कंतावत्वंस्तिनमाचन॥ सर्वलक्ष्मीप्रसिद्धार्थसर्वगप्रदयायव॥ अ
ष्टम्यादिदृग्गम्याकंदर्गदवीस्तिनारुवर॥ वाक्मनसह॥ श्रीसं
वल्लानआवाहन॥ प्रिदव कूक्षपूजा॥ धनउग्रचक्षुयादगुखा
दयायमाल॥ खद्युतं॥ रुगवति सं॥ सरुलिसं॥ छतालीनखादया
य॥ धननवदृग्गम्यापूजायायमाल॥ धनगवति॥ निर्वानिच्छाय॥ व
लि॥ त्वाकमहावलिनधूनक॥ धूपदीपजाय॥ स्नाग॥ श्रीसंवल

प्रिगृह॥ महामाया॥ प्रिदव॥ इवनयाहक॥ वाक्मनसह॥ तर्प्य
न॥ नुकानक॥ धनप्राथयाय॥ अश्वपूर्व॥ बलिविसर्जनमत
व॥ सारिधाय॥ कृतिमहाअष्टमिरवप्रस्थायनविधि॥ जेकं
लेवदयाप्रेयसाजनेनवदयाविधि॥ पलानवलिसजातन
लंरयनहाय॥ चिह्नसिंधून॥ जजमका॥ स्नानखल॥ अद्यादिमास
नरुग॥ सूर्यार्च॥ गुन्तमस्कागादिन्यास॥ जलपात्र॥ अर्घपा

प्र. त. न. स. दि. आ. त्म. पू. जा. ॥ माला. नि. य. १०. पं. श्रु. व. लि. द. द्या. ॥ श्री. स. व.
ली. आ. वा. ह. रा. ॥ हि. द. व. ॥ स. म. स. कं. द्रु. धू. या. ॥ थं. सा. ग. म. पा. ग. म. न. खा.
द. या. य. माल. ॥ धू. प. दी. य. नै. व. द्य. जा. प. स्ता. ग. ॥ त. र्थ. न. ॥ पा. थ. ॥ न. व. इ.
ग. स. हि. त. न. स. म. य. का. य. पि. स. र्क. न. ॥ कृ. ति. भू. त. ल. व. द. या. वि.
धि. ॥ ॥ त. ता. नै. म. या. वि. ध. न. ॥ पू. ला. न. व. लि. स. जा. त. न. ॥ चि. ह. सिं. ध्रु.
स्वा. न. ख. ल. ॥ अ. या. दि. ॥ गु. न. न. म. स्का. रा. दि. न्या. स. ॥ सां. ग. म. पा. र्क. द्रु. धू. कृ.

द्रु. या. ॥ थं. पा. थ. या. य. न. व. इ. ग. स. हि. त. पू. जा. या. य. माल. ॥ धू. प. दी. य. जा. प.
स्ता. ग. ॥ त. र्थ. न. ॥ पा. थ. ध. न. ॥ कृ. ति. यि. व. न. या. वि. धि. ॥ ध. न. लि. स. लि. इ. न.
या. वि. ध. न. ॥ पा. ग. सा. ध. न. ॥ का. व. न. म. र्क. र्क. त. थं. व. लि. ला. हा. ग. ला. स. ज.
दि. न. त. ल. दा. न. तं. पू. जा. या. य. ॥ इ. व. न. ह. वा. स्यं. माल. का. ता. ल. ला. च. का. य.
त. ॥ क. ल. स. र्क. स. कं. सि. न्धु. मू. र्क. कृ. मू. मा. हा. पा. ग. व. लि. कृ. कृ. ल. नु. जा. ॥
जा. पू. जा. ॥ ध. न. ता. ल. ला. च. का. य. त. य. ॥ ध. न. लि. स. दा. गी. व. जा. दि. न. ॥

इवन पूजायाय ॥ अथादि मास नरु प्र वाक् ॥ महानवमि पार्वत्य
खरु हागद बाई ननिमित्तार्थ कून मारु सु महारु न वाय अर्थ नमः
गुनू नमस्का नादि न्यास मालका याय ॥ जल पात्र अर्घ पात्र तूत
सूदि आत्म पूजा ॥ माल निघ ०७ ॥ यक्ष वलिंद याग ॥ साधनं क
त्वाः ॥ ग्री संवर्त्तन आवाहन ॥ ओसन ॥ ध्यान ॥ प्रान प्रणिछा ॥
चन्दन सिंदरु पृष्य ॥ धूप दीप नेव य ॥ प्रियांजलि आवाहन याय

गिदव पूजान ॥ कलस कूसु माहापात्र पूजा ॥ योता ॥ वंता ॥ यंता
सकल सं ॥ नित्य कर्म रुक् नखाय ॥ बलि ॥ निवीन छा य ॥ त्वा कम
हा वलि न धून क ॥ धूप दीप ॥ ज्ञाय ॥ स्नातु ॥ ग्री संवर्त्तनी ॥ ला क ग
प्र संता न स्रु महामाया ॥ गिदव ॥ इवन या मालका ॥ वाक् न सह
प्रीत पुता त्यादि ॥ तु कान क ॥ वृषि पूजा ॥ मणू न र्य न ॥ न क वलि
विय ॥ वृक न छा य ॥ इवन सित्र का काय ॥ नव ना प्र या रु का सति कू दू

वालनवलसपुनिकाकाय॥ वलिविसर्जुन धनलिन्द्रमनयातता
ललाचक॥ ऊजमान् स्वस्तिकसतय॥ निवर्चनयाय दक्षिनातय॥
इसकनलुवासतयाव कलसातिखयाय॥ उकात्रंत्यादि॥ सिंधुमू
द्रा॥ विरु सिंदूर माहनी सलग्न स्वानविय॥ कोमात्रिछाय॥ धन
लिक्कूकायावलवद्गाय॥ तथ्यनयाचक॥ पूर्वचमु॥ आनृति॥
प्रतिष्ठितासि॥ कूह्याजलिकायाव प्रीतपुतायादि॥ प्रथम

चक्रवाक्कनसह॥ अंदज्॥ अक्षाविसति॥ द्वितियचक्र॥ वाक्क
अर्धयाय॥ अविनासा॥ प्रीतियचक्र वाक्कनसह॥ कंच॥ ऊयंति
कावाक्क॥ प्रीतिचक्रसंपूर्णनिमित्तार्थन॥ पाठअतिरिक्क वाक्क
नसह॥ पाठअधमूर्खंरुत्या॥ साखिअय॥ मतविय॥ वीनहाज
न॥ रूतिमाहानवमिखरुहागपूजाविधि॥ तथादसमीवि
धन॥ वलिसजातन॥ लंखनहाय॥ चरु सिंधु स्वान् खल॥ अथा

दिमासतनकृत् ॥ गुनूनमस्तान ॥ न्यास ॥ जलपात्र ॥ अर्घ्यपात्र ॥ तूतसूत्र
आमपूजा ॥ माननियत ॥ यक्षवलि ॥ ग्रीसंवत्सान ॥ आवाहन ॥ द
व्यागिनीपूजा ॥ कूसूपूजा ॥ खनु ॥ रुगवती ॥ संकलि ॥ स्वति ॥ चुकानपा
य ॥ लागसाकर्मस्वारु पायमात ॥ मलातसा संनायंयाय ॥ धूपदीप ॥
जाय ॥ लाग ॥ पाथपाय ॥ वलात ॥ रुहाव ॥ अष्टमकुनयिसईनयाय
थनलि ॥ जजमानस्वस्तिकसतय ॥ हाथपूजायाय ॥ धनलि ॥ खड्गकाया

वमार्कगुया ॥ पदपाव ॥ जवलासलव ॥ लाय ॥ यादवीपदपावखवला
सलव ॥ लाय ॥ निवर्चनयाय ॥ तूतवालविप ॥ दकि ॥ लातय ॥ अवि
सय ॥ वाय ॥ विरु ॥ सिंधु ॥ सगहन ॥ स्नान ॥ नवनाष्टुत्थान ॥ इवन ॥ छाय
यिवन्यंछाय ॥ त्रिया ॥ लिला ॥ छाय ॥ जात्रति ॥ पुतिस्था ॥ साखभय ॥
धनलि ॥ कूसू ॥ कायाव ॥ जजमान ॥ लव ॥ लाय ॥ कासाचक ॥ दकि ॥ लात
यक ॥ दलपाततचक ॥ कूसू ॥ चिलावतय ॥ धनलि ॥ रुतस ॥ पाल

सङ्कटयदिगस्वयाव याग्रायाय॥ गमनं चार्थलागाय रुमाय वि
जयाय च॥ गङ्गय कविनासाय पुनत्राय विजयाय च॥ इत्यथा ला
गच्छीय॥ धनलिखत्तुलिकायावत्वादावधाय संत॥ धनलिक्
मूया जलिकायाव प्रीत प्रतात्नादि प्रथमवक्त्रवाक्॥ अस्ताविंश
तिद्वितीयवक्त्रवाक्॥ अविनासा त्रिणियवक्त्रवाक्॥ ताम्र
जयंतिका वाक् महादण्डमिषावर्चन्य खड्गयाग्रादवार्चननिमित्ता

र्थन॥ इति महादसमिषाखड्गयाग्राविचिसमाप्त॥ ॥ गताः
चतुर्थियायिचि॥ पूजाशय वलिपात १ लंखनहाय चिह्नसिंधुस्वा
नखल॥ अयादि वाक्॥ महाहमि नवामि दणमि संपूर्ण खड्ग
हस्तं जनचतुर्थी दवार्चन कुलमार्तितु महासेन वाय अर्धनमः॥
कुलपात्र अर्धपात्र रक्तगुह्मि आत्मसुखा॥ आसन्नमालक क्रिया
जलिकाय॥ धूपदिय जायसात्र॥ नुकानक॥ अम्बसर्व॥ वलिवि

सङ्कन साखिधाय जम्बुनखमुच्छविसङ्कनयाय कृतिचतु
र्थियाविधि ॥ ॥ धनलिद्वनद्य तसिंधुतनिर्माल्यकाय ॥ ॥
ततावालप्रदानं ॥ जयायविजयायैव जयंतीचायनाजिता ॥ नन्दा
तडाजयातीमाकलायैवास्तकास्तिका ॥ दिव्ययागिनमहायागिनः
सिद्धियागिनगलायनी ॥ साकिनीकालनीग्रीव उर्ध्वकलीनिसाक
नी ॥ जग्नि ॥ गम्भीराघावनास्तुता मयनांगीउलार्मिका ॥ तीषत्त

ज्यमहानंदां कालासूखिस्तुथैवय दकि ॥ यिनाचिहसिनीयैव
जकनीधूर्ध्वनिस्तुथ ॥ तिष्ठतद्वैसर्वासदि ॥ तुष्टिर्दृष्टातथैवय ॥
नेमप ॥ दूंकालीलायत्रीदिर्घाघृष्टांतीकलहप्रिया ॥ मातंगीकाक
दिहिस्यतथानिभूतवागकि ॥ यच्छीम ॥ गकसीघावनादंचत्रका
कीविश्वनूयिनी ॥ जयंकनिनोडनदी मुस्कांगीनत्रहाजिनी ॥
वायूव्य वीनरुडमहाकाली कंकालीविहगानना ॥ काभत्री

हीमरुद्राद्यवायुमहानना उरुन वक्राद्यवेद्वीगोडी
वर्धिकाग्नीषोमिना वानाहीनात्रसिंहीवगिवद्विचक्राः
गुणान् गुददद्यामहायागिबलिंगं कुरुमसदा ॥ श्रीचतुष्टय
योगिनित्यावलिंगं कुरु सर्वसात्त्विकं कुरु सर्वविद्युविनात्मयसव
नागः प्रसात्त्विकं कुरु कुरु दं पूष्यं पूष्यं दीपं पुनिसात्रं कुरु कुरु कुरु कुरु
हा ॥ कुरु चक्राद्यवागिनीवत्स तं कुरु चक्राद्यवागिनीवत्स

गुणद्वीयधनं श्रीवस्याधकतामया नागलाकपुत्रनम्यजसिक्ता
नमहावलं ॥ तद्व्यातिष्ठतविद्याजमाचनदर्पिता ॥ नागहीतामहा
द्वीसंसात्ररुयनासनी कुरु विद्यामहाद्वीयीमानागहस्तिका
कुरुवलीगिविद्यासर्वसिद्धिपुदायका गार्हद्व्याकलिकदस
दिसत्त्ववनसम्पत्तालमूल कुरुवीर्यययीर्ये विषमचतुष्टयधम
लकहिससान सिद्धोक्तिनेयवृक्षं उदधिगुणं धूमकावावता

नका लया पूरु गिया मधव पून वन आदियान पुधन आलाय
जाग मुख्य कुनयान नगन काम नयन वन य उरू त्या मट हास पर
यट ह नव लाउद स पुट (१) श्री गणेशाय नमः यनु यानि नित्य य ह
माव ध्या चलय श्री माका वाउद (१) मयूक य धि गि नी अकि नी ल्म कि नी
नी २ कासि न च नु द (१) दुा व उ म ल य क बुद्ध बाह दू न न श्री रा
छ ह व अ क उ न सि वि न ज क सि धि क पु उ हाल सु न्दा या नि जाग

हि म गि त्रि लि व न का वि द पु या ला सो नु म (१) द (१) ल गु प नू न ग न का
म ल कां वू क वा ४ का नु र्मि का ई (१) म ग ध पू न व न क र्मु कु धु क लि
५ व छुा म हं स बा ह हि म गि ल ज य न ल पा ट ल ज ५ ला ख अ ग्नेः
ह मा ट च कू मू नि ग ल निल य अ ह य तुं च द (१) ना मो त्र पू ष्य रा ख गि त्रि
गा ह न गु ह वा कू व सि ह ना द १ वं म ख ती म ना द नि व पू न न ग न रु
२ कू ल न या यी १ वि ध्या क च १ पु व न गि त्रि न ट य क कू ले च न कां

आशा भोंसले

1.191

ASHA ARCHIVES

आशा भोंसले यांच्या यादीत या पुस्तकाचा उल्लेख आहे. या पुस्तकाचा उल्लेख या यादीत आहे. या पुस्तकाचा उल्लेख या यादीत आहे.